नाम – डॉ. मोती लाल शाकार

महाविद्यालय का नाम – दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

संकाय – कला

पदनाम – सहायक प्राध्यापक

विषय – भाषाविज्ञान

शीर्षक – 'पाश्चात्य भाषा चिंतकों के विचार'

पाश्चात्य भाषा चिंतको के विचार

डॉ. मोतीलाल शाकार
सहायक प्राध्यापक
दुर्गा महाविद्यालय
रायपुर (छ. ग.)

' पाश्चात्य भाषा चिंतको के विचार '

प्रस्तावना : भारतीय आधुनिक भाषा-विज्ञान के विकास पर पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव पड़ा है | पाश्चात्य विद्वानों ने जैसे साहित्य की अन्य विधाओं के विकास में पचुर सामग्री दी वैसे ही भाषा-विज्ञान को भी महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध कराई | इतिहास-लेखन की दृष्टि से जैसे सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य का इतिहास 'गार्सा द तासी' ने लिखा वैसे ही भारतीय भाषाओं पर सर्वप्रथम कार्य 'विशप कोड वेल' (cold well 1814-1891) ने किया | इनका सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'द्रविण भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण' सन. 1856 में प्रकशित हुआ |

भाषा-विज्ञान सम्बन्धी कार्य यूरोप में भारत के बाद आरम्भ हुआ | अठारहवीं शताब्दी यूरोप में जैसे अन्य दृष्टियों से महत्वपूर्ण है वैसे ही भाषा-विज्ञान की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है | यद्दपि इसके पहले ग्रीक भाषा में थोड़ा-बहुत कार्य हुआ था पर वह इतना महत्वपूर्ण नहीं बन पाया था | विषय की स्पष्टता के लिए यूरोपीय भाषा सम्बन्धी इतिहास को तीन भागो में बॉटा जा सकता है - 1. प्राचीन काल 2. मध्य काल और 3. आधुनिक काल |

प्राचीन काल (469 ईसा पूर्व से 1 ई. तक)

सुकरात : यूरोप में अन्य सभी विषयों की भाँति भाषा के भी अध्ययन का आरम्भ यूनान में हुआ, जिसके सर्वप्रथम विचारक **'सुकरात'** थे | सुकरात ने सर्वप्रथम भाषा पर विचार कर यह सिद्ध किया था | कि शब्द, ध्वनि और अर्थ में कोई स्वाभाविक सम्बन्ध नहीं है | उनके अनुसार यदि दोनों में ऐसा सम्बन्ध होता तो सर्वत्र एक ही वस्तु के लिये एक ही नाम होता है | वस्तुतः यह मत ठीक भी है क्योंकि उनमें आपस में स्वाभाविक सम्बन्ध न होकर माना हुआ सम्बन्ध होता है | भाषा

के विषय में सुकरात की दूसरी मान्यता थी कि ऐसी भाषा का निर्माण असम्भव नहीं है जिसमें शब्द और अर्थ या वस्तु और नाम का स्वाभाविक सम्बन्ध हो | सुकरात यह कथन विश्चय ही सत्य से बहुत दूर है |

प्लेटो : सुकरात के बाद इस क्षेत्र में प्लेटो ने महत्वपूर्ण कार्य किया | प्लेटो ने शब्द, ध्वनि और अर्थ के सम्बन्ध को स्थापित करते हुए यह सिद्ध किया कि दोनों में बहुत निकट का सम्बन्ध है | पर यह मत विद्वानों को मंजूर न हुआ | प्लेटो ने भाषा की ध्वनियों का वर्गीकरण भी किया - सघोष ध्वनियाँ एवं अघोष ध्वनियाँ | सघोष ध्वनियों के अन्तर्गत स्वरों को रखा और अघोष के अन्तर्गत बाकी समस्त ध्वनियों को |

अरस्तू : अरस्तू का भाषा सम्बन्धी विचार सुकरात और प्लेटो की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण है | उनके अनुसार शब्द, ध्वनि और अर्थ में आपस में घनिष्ट सम्बन्ध होता है | ग्रीक भाषा की व्याकरणिक संरचना (संज्ञा,त्रिया,कारक,लिंग आदि पदों में विभाजन) के अन्तर्गत उन्होंने वाक्य के दो भेद स्वीकार किये हैं- उद्देश्य और विधेय | अरस्तु के भाषा-वैज्ञानिक कार्य को निम्न रूपों में दखा जा सकता है - 1. अरस्तू के अनुसार वर्ण अविभाज्य ध्वनि है, 2. मात्रा तथा सम्बन्ध सूचक शब्दों पर विचार, 3. वाक्यों का पदों में विभाजन तथा संज्ञा और त्रिया पर संक्षेप में विचार, 4. कारक तथा उनके प्रकट करने वाले शब्दों की ओर प्रथम संकेत दृष्टि, 5. स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग के लक्षणों पर विचार | तात्पर्य यह की सुकरात और प्लेटों की अपेक्षा अरस्तू का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन कार्य अधिक महत्वपूर्ण था | चूँकि ये तीनों विद्वान दार्शनिक थे भाषा-वैज्ञानिक नही, इसलिए भाषा-विज्ञान का अध्ययन उतना सशक्त नहीं हुआ जितना कि दर्शन का | यह होना स्वाभाविक भी था |

मध्य काल (18वीं शताब्दी)

जैकसन : पाश्चात्य विद्वानों ने सहज भाव से यह स्वीकार किया है कि यूरोप में आधुनिक 'तुलनात्मक भाषा-विज्ञान' का जन्म तभी हुआ जब पाश्चात्य विद्वान संस्कृत के संपर्क में आये | इस सम्बन्ध में जैकसन का मत द्रष्टव्य है- "तुलनात्मक भाषा-विज्ञान उसी दिन जन्मा जिस दिन पाश्चात्य जगत ने संस्कृत से साक्षात्कार किया | भारत की पवित्र भाषा तथा प्राचीन ज्ञान के क्षेत्र में कार्य करने वाले, इन प्रारम्भिक विद्वानों का उत्साह आज भी उनके आनुयायियों की रगों में

उष्ण रक्त का संचार कर रहा है तथा आगे आने वाली पीढियाँ भी उससे सदैव प्रेरणा प्राप्त करती रहेंगी ।"

आधुनिक काल

सर विलियम जोन्स : सर विलियम जोन्स ने संस्कृत, ग्रीक और लैटिन का सम्बन्ध स्थापित करते हुए यह सिद्ध किया कि इन तीनों भाषओं का मूल स्त्रोत या मूल भाषा (proto speech) एक ही है । आपने 1786 में 'रायल एशियाटिक सोसायटी' की स्थापना करके यूरोपीय विद्वानों को संस्कृत के व्याकरण एवं ध्वनिविदों से परिचित कराया । उनके अनुसार- "संस्कृत भाषा की प्राचीनता का निशचित ज्ञान भले ही हमें न हो, किन्तु इसका रचनात्मक गठन आश्चर्यजनक है, जो ग्रीक ज्ञान से भी अधिक विशद तथा इन दोनों से भी आर्धक परिष्कृत एवं परिमार्जित है ।"

डब्लू हम्बोल्ट : हम्बोल्ट ने की ऐतिहासिक दृष्टी पर अधिल बल दिया और इसी के अनुसार भाषओं के दो वर्गो की ओर संकेत किया– (1) अश्लिष्ट एवं (2) श्लिष्ट । आपके द्वारा जावा द्वप की 'कवि' भाषा पर किया गया कार्य काफी सराहनीय रहा है । शब्दों के विकास में आपका विश्वास है कि सभी शब्दों का विकास धातुओं से होता है । इसे और स्पष्ट करते हुए आपने कहा है कि पहले सभी प्रत्यय स्वतंत्र शब्द थे जो अन्य शब्दों में अर्थ की विशेषता लाने के लिए जोड़े जाते थे । इनके अनुसार भाषा एक अखण्ड प्रवाह है, उसमें स्थिरता की अपे गतिशीलता रहती है । वह पूर्ण होती है एवं अपना अलग-अलग विशिष्ट महत्व रखती है उन्होंने यह भी स्वीकार किया है कि भाषओं का सफल आकृतिमूलक वर्गीकरण असम्भव है एवं भाषा की उत्पत्ति पर विचार करना व्यर्थ है । भाषा परिवर्तन मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है प्रत्यय कभी स्वतंत्र शब्द थे । शब्दों का आधार धतुएँ है ।

रास्मस रास्क : (Rasmus Rask 1787-1832) ने आइसलैण्ड की भाषा का व्याकरण तैयार किया, जिसमें सर्वप्रथम शास्त्रीय विवेचनात्मक पद्धति को अपनाकर भाषा के रूपों को नियमबद्ध किया । आपने ही सर्वप्रथम सान्निकर्ष-जन्य-स्वर परिवर्तन की ओर विद्वानों का धान आकृष्ट किया और संस्कृत भाषा से द्रविण भाषा की भिन्नता को स्पष्ट किया । इन्हें तुलनात्मक भाषा-विज्ञान का प्रथम विशेषज्ञ माना जाता है । इन्होंने ऐन्ग्लोसेक्सन, फीजी तथा लॉप भाषओं पर व्याकरण ग्रन्थ लिखे हैं । ध्वनि-परिवर्तन-सम्बन्धी ग्रिम नियम का संकेत भी इन्होंने सर्वप्रथम किया था । रास्क के अनुसार किसी भी देश के इतिहास को जानने के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण साधन है ।

याकोब ग्रिम : आप सर्वप्रथम ऐसे प्रमुख व्यक्ति है जिनसे कुछ महत्वपूर्ण ध्वनियों के लिए एक निश्चित नियम की कल्पना की | आप द्वारा लिखित 'जर्मनी भाषा का व्याकरण' काफी महत्पूर्ण है और इससे कही ज्यादा महत्वपूर्ण है - 'ध्वनियों का निरूपण' जो कि 'ग्रिम नियम' नाम सेव प्रसिद्ध है | ग्रिम नियम के अन्तर्गत दिये गए संकेत आज भी भाषा-विज्ञान के अन्तर्गत काफी महत्वपूर्ण हैं | ग्रिम ने भाषओं के ऐतिहासिक अध्ययन पर अधिक बल दिया | इन्होंने अनेक नये भाषा-वैज्ञानिक शब्दों की रचना की जिसमे कुछ शब्द जैसे अपश्रुति आदि भी प्रचलित हैं |

आगस्त श्लाइखर : (1821-1868) आगस्त श्लाइखर के 'भारोपीय भाषाओं के तुलनात्मक व्याकरण का सार संग्रह' नामक ग्रन्थ का भी भाषा-विज्ञान की दृष्टी से महत्वपूर्ण स्थान है | आप भाषा-विज्ञान को स्वतन्त्र एवं प्राकृतिक विज्ञन की श्रेणी में रखने के पक्षपाती थे | मूल भारोपीय भाषा का पुनर्निर्माण भाषा-वैज्ञानिक दृष्टी से इनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है | उपलब्ध आधुनिक भाषओं के आधार पर श्लाइखर ने मूल भारोपीय भाषा की ध्वनियों, पदों तथा वाक्यों की ही कल्पना नहीं की अपितु उस कल्पित भाषा में एक कहानी भी लिख डाली थी | किन्तु, भषा का कल्पित निर्माण असम्भव के साथ-साथ अवैज्ञानिक भी है, इसलिए मान्यता भी नहीं मिली | आपने विश्व की भाषाओं का आकृतिमुकल वर्गीकरण करते हुए उन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया-1. अयोगात्मक भाषाएँ, जैसे- चीनी, 2. योगात्मक अश्लिष्ट भाषाएँ जैसे- तुर्की और 3. योगात्मक श्लिष्ट भाषाएँ जैसे- संस्कृत |

श्लाइखर ने एक भारोपीय वर्ग की भी परिकल्पना की | आकृतिमुलक वर्गीकरण के तीन वर्गों को श्लाइखर ने भाषा के विकास के तीन सोपान माना | उनके अनुसार कोई भी भाषा पहले योगात्मक होती है फिर अश्लिष्ट योगात्मक तथा अन्त में श्लिष्ट योगात्मक | श्लिष्ट योगात्मक भाषा के विकास की अंतिम दशा है |

मैक्समूलर : जर्मन विद्वान मैक्समूलर ऐसे एकमात्र भाषा-वैज्ञानिक हैं जिन्होंने सर्वप्रथम अपने द्वारा अध्ययन द्वारा जन साधारण को भी भाषा-विज्ञान से परिचित कराया | आपने भरतीय

व्याकरणिक ग्रंथो का गहन अध्ययन ही नही किया अपितु सायण-भाष्य का प्रकाशन भी कराया | 1861 में आपने भाषा की उत्पत्ति के बारे में 'डिंगडैंगवाद' की भी खोज की थी | प्रचार कार्य के साथ ही आपने जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किया वह उनका संग्रह-कार्य है | आर्यों का परिचय देने के बाद आपने आर्य भाषा के उद्गम, भाषा की प्रकति, भाषा का विकास, विकास का कारण तथा भाषओं का वर्गीकरण आदि पर भी महत्वपूर्ण कार्य किया और आर्यों का मूलस्थान मध्य एशिया निश्चित किया | इन्होंने विद्वानो का ध्यान अर्थ-विचार की ओर भी आकर्षित किया |

इनका एक और महत्वपूर्ण कार्य 'नागरी लिपि के प्रचार का है | इनके पूर्व यूरोप आदि कौन कहे भारत के सभी प्रांतों में 'नागरीलिपि' का प्रचार नहीं था | इनके अथक परिश्रम के परिणामस्वरूप यूरोप तथा भारत दोनों में ही इसकी वैज्ञानिकता सराही गयी और संस्कृत आदि के लिए इसका प्रयोग होने लगा |

अमेरिकन (William Dwight Whitney) द्वारा लिखित 'भाषा और भाषा का अध्ययन' तथा भाषा का जीवन और विकास नामक पुस्तकों का भाषा-विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है | आप द्वारा सन. 1879 ई. में एक संस्कृत व्याकरण भी प्रस्तुत किया गया | आपने भाषा को मान्य संस्था घोषित किया और शब्दों को रूढसंकेत बतलाया और कहा कि भाषा संबंधी विवेचन में गोपनीयता नहीं होनी चाहिए |

सस्यूर - (1857 - 1913) : प्रसिद्ध स्वीस विद्वान सस्यूर जेनेवा विश्वविद्यालय में भषा-विज्ञान के प्राध्यापक थे | ये फ़ायड 1856 एवं दुर्खेम (1858) के समकालीन थे | सस्यूर ने ही मनोविज्ञान एवं समाज-विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में भाषा को देखने की परम्परा रखी | तालव्य नियम की खोज इनका पहला मौलिक कार्य है जो ऐतिहासिक तुलनात्मक भाषा-विज्ञान पर आधारित था | इस नियम से मूल भारोपीय भाषा की ध्वनिव्यवस्था में क्रान्तिकारी प्रवर्तन हुआ | इसमें उन्होंने वर्णनात्मक बल्कि संरचनात्मक पद्धति अपनाई, जबकि यह ऐतिहासिक महत्व का ऐतिहासिक भाषा शास्त्रीय विश्लेषण था | सी. बेली, तथा सेचेहाये इनके दो शिष्य थे, जिन्होंने कक्षा में दिये गए व्याख्यानों के आधार पर इनके निम्नलिखित महत्वपूर्ण सिद्धान्तों का संकलन किया :

(1) सस्यूर ने भाषा तथा वाक् को अलग किया | (क) भाषा एक व्यवस्था है उनके अनुसार और वाक् उसका उच्चरित या लिखित रूप है | (ख) भाषा प्रयोक्त के मस्तिष्क में होती है जबकि वाक् व्याक्ति द्वारा प्रयुक्त होता है | इस प्रकार भाषा सामाजिक है और वाक् वैयक्तिक | या वाक् भाषा का वैयक्तिक रूप है तो भाषा वाक् का सामाजिक रूप | (ग) भाषा की सत्ता मानसिक है जबकि वाक् की भौतिक है | (घ) भाषा अमूर्त है और वाक् मूर्त | कोपेनहेगेन संप्रदाय ने भाषा के अमूर्त वाक् को मूर्त माना | प्राग सम्प्रदाय ने स्वनिम की सत्ता 'भाषा' में तथा उपस्वन की सत्ता वाक् में स्थापित की |

(2) भाषा पदार्थ नहीं रूप है | भाषा के दो पक्ष-विचार (थाट) एवं ध्वनि हैं | अर्थात वास्तविक वास्तु, जीव, भाव विचार आदि का मानसिक विम्ब भाषा का अभिव्यक्त पक्ष है | दोनों के सम्बन्धों की व्यवस्था भाषा है |

(3) संकेत (भाषिक), ध्वनि, बिम्ब और अर्थ (Concept) के सम्बन्ध को कहते हैं | संकेत यादृच्छिक होता है | संकेत एकरेखीय (ध्वनिबिम्ब) और अर्थ का सम्बन्ध एकस्तरीय होता है |

(4) भाषा की 'ध्वन्यात्मक अभिव्यक्ति' संकेतक है, ध्वन्यात्मक अभिव्यक्ति द्वारा व्यक्त अर्थ संकेतित है, तथा दोनों के बीच 'यादृच्छिक सम्बन्ध' संकेत है |

ल्योनार्ड ब्लूमफील्ड : ल्योनार्ड ब्लूमफील्ड (Leonard Bloomfield 1887-1949) अमेरिकी भाषा-वैज्ञानिक थे | भाषा-विज्ञान क्षेत्र में आपने एक अध्यापक के रूप में प्रवेश किया | आपने 1913 से 1921 ई. तक अमेरिका के इलिनास विश्वविद्यालय में भाषा तथा तुलनात्मक भाषा-विज्ञान के तथा उसके पाश्चात् ओहापो विश्वविद्यालय में भाषाशास्त्र एवं जर्मन भाषा के प्राध्यापक के रूप में भाषा-विज्ञान की सेवा की | 1927 में शिकागो विश्वविद्यालय में आप जर्मनिक भाषा-विज्ञान के अध्यक्ष पद पर निरूक्त हुए, फिर 1940 से आपने जीवन के अन्त तक आप येल विश्वविद्यालय में कार्यरत रहे |